॥ श्री गणेशाय नमः॥

हिन्दी पाक्षिक Fortnightly

Baat Hindustan ki

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan ki

रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

RNI No.: WBHIN/2021/84049

विक्रम संवत 2083, श्रावण मास, कशुक्ल पक्ष चतुर्थी, 16-31 अगस्त 2026 (16-31 August 2026), वर्ष-6 (YEAR-6), अंक - 08, पृष्ठ - 4, मूल्य - ₹2, (PRICE- 2/-)

विभाजन की विभीषिका को नहीं भूल सकते: शुभेंदु

देश की आजादी का जश्न जहां करोड़ों भारतीयों के लिए गौरव और खुशी का अवसर है, वहीं वर्ष 1947 का विभाजन अपने साथ ऐसी पीड़ा और त्रासदी भी लेकर आया, जिसे इतिहास के पन्नों से मिटाया नहीं जा सकता। लाखों लोग रातोंरात अपने घर, जमीन और पुरखों की विरासत छोड़ने को मजबूर हुए। हजारों परिवारों ने हिंसा और दंगों में अपने लोगों को खोया। पश्चिम बंगाल में इस त्रासदी की स्मृतियां आज भी कई परिवारों और इलाकों के इतिहास का हिस्सा है। विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस के अवसर पर उत्तर कोलकाता के भौलाली युवा केंद्र में आयोजित कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने देश के विभाजन, 1946 के ग्रेट कलकत्ता किलिंग, नोआखाली की हिंसा और विस्थापित परिवारों की पीड़ा को याद किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वतंत्रता के साथ जुड़ी इस पीड़ा को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना जरूरी है, ताकि देश के इतिहास के उस दौर को भुलाया न जा सके। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत की स्वतंत्रता जितनी आनंददायक थी, उतना ही पीड़ादायक अखंड भारत को द्विराष्ट्र सिद्धांत के आधार पर विभाजित होते देखना था। उन्होंने कहा कि विभाजन केवल जमीन का बंटवारा नहीं था, बल्कि इससे करोड़ों लोगों का जीवन प्रभावित हुआ और समाज को गहरी चोट पहुंची।

'विभाजन के नाम पर दो बार हुआ हिंदुओं का नरसंहार'

शुभेंदु अधिकारी ने अपने संबोधन में 1946 के ग्रेट कलकत्ता किलिंग और नोआखाली नरसंहार का विशेष रूप से उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भारत के विभाजन के दौर में हिंदू समुदाय को भीषण हिंसा का सामना करना पड़ा। उनके अनुसार, वर्ष 1946 में कलकत्ता और नोआखाली में हुई हिंसा की स्मृति को भुलाया नहीं जा सकता। मुख्यमंत्री ने कहा कि इतिहास के इन अध्यायों को राजनीतिक सुविधा के हिसाब से देखने के बजाय तथ्यों के साथ समझने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि उस दौर में सामान्य नागरिक सबसे ज्यादा प्रभावित हुए और बड़ी संख्या में परिवारों को अपना घर-बार छोड़ना पड़ा। उन्होंने गोपाल मुखर्जी के योगदान का भी उल्लेख किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि उस कठिन दौर में गोपाल मुखर्जी ने हिंसा का प्रतिरोध किया और हिंदुओं की रक्षा के लिए खड़े हुए। उन्होंने कहा कि आज की पीढ़ी को ऐसे लोगों के योगदान और उस समय की परिस्थितियों के बारे में जानकारी होना जरूरी है।

16 से 19 अगस्त 1946 के बीच भड़की थी भीषण हिंसा

ग्रेट कलकत्ता किलिंग का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि 1946 की घटनाएं बंगाल के इतिहास का बेहद दर्दनाक अध्याय हैं। 16 से 19 अगस्त 1946 के बीच तत्कालीन कलकत्ता में व्यापक सांप्रदायिक हिंसा हुई थी। यह हिंसा मुस्लिम लीग द्वारा पाकिस्तान की मांग को लेकर घोषित डायरेक्ट एक्शन डे के आह्वान के बाद भड़की थी। कई दिनों तक चली हिंसा में बड़ी संख्या में लोग मारे गए और घायल हुए। इसके बाद बंगाल के अन्य हिस्सों में भी सांप्रदायिक तनाव और हिंसा की घटनाएं हुईं। नोआखाली की घटनाओं ने भी उस दौर की भयावहता को और गहरा कर दिया। उत्तर कोलकाता में कार्यक्रम आयोजित किए जाने को लेकर भी मुख्यमंत्री ने कहा कि विभाजन के बाद इस इलाके में बड़ी संख्या में विस्थापित परिवार आकर बसे थे। उनके संघर्ष, पुनर्वास और जीवन को दोबारा खड़ा करने की कहानी बंगाल के सामाजिक इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

'सत्ता की राजनीति में हुआ देश का विभाजन'

मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने कांग्रेस और तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्व पर भी निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि उस समय सत्ता हासिल करने की राजनीति के कारण देश का विभाजन स्वीकार किया गया। उन्होंने कहा कि द्विराष्ट्र सिद्धांत के आधार पर देश को बांटने का फैसला बेहद दूरगामी और पीड़ादायक साबित हुआ। उन्होंने कहा कि भारत की अखंडता और सांस्कृतिक एकता की भावना को समझना आज भी जरूरी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनका लक्ष्य केवल इतिहास को याद करना नहीं, बल्कि नई पीढ़ी को इतिहास के उन पक्षों से परिचित कराना है, जिनका लंबे समय तक पर्याप्त उल्लेख नहीं हुआ।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी और ऐतिहासिक व्यक्तित्वों को याद करने की अपील

शुभेंदु अधिकारी ने अपने संबोधन में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, छत्रपति शिवाजी महाराज और महाराणा प्रताप जैसे ऐतिहासिक व्यक्तित्वों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि देश के इतिहास को किसी एक राजनीतिक दृष्टिकोण से नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी को इतिहास के विभिन्न पक्षों को पढ़ने और समझने की जरूरत है। देश के लिए संघर्ष करने वाले लोगों के योगदान को सामने लाना और उनके विचारों से परिचित कराना समाज की जिम्मेदारी है।

गोपाल मुखर्जी के नाम पर स्मारक का संकेत

मुख्यमंत्री ने बताया कि पश्चिम बंगाल में भाजपा सरकार बनने के बाद कोलकाता की एक सड़क का नाम बदलकर 'गोपाल मुखर्जी एवेन्यू' किया गया है। उन्होंने संकेत दिया कि आने वाले समय में कोलकाता के किसी प्रमुख स्थान पर गोपाल मुखर्जी की बड़ी प्रतिमा स्थापित करने पर भी विचार किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि ऐसे स्मारक केवल किसी व्यक्ति को सम्मान देने के लिए नहीं होते, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को इतिहास से जोड़ने का माध्यम भी बनते हैं।

'खेला होबे दिवस' पर भी साधा निशाना

अपने संबोधन के दौरान मुख्यमंत्री ने पूर्ववर्ती तृणमूल कांग्रेस सरकार पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि 16 अगस्त को जिस दिन 1946 में कलकत्ता में हिंसा का दौर शुरू हुआ था, उसी तारीख को पिछली सरकार के कार्यकाल में 'खेला होबे दिवस' मनाया जाता था। शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि जिस तारीख से जुड़ी इतनी दर्दनाक ऐतिहासिक स्मृतियां हैं, उस दिन के राजनीतिक इस्तेमाल पर भी सवाल उठना चाहिए। उन्होंने कहा कि अब भाजपा सरकार इस दिन को अलग तरीके से देख रही है और राज्य के लोगों की सुख-समृद्धि तथा दीर्घायु की कामना करेगी। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि खेला होबे का नारा देने वाले अब राजनीतिक मैदान से बाहर हो चुके हैं। उन्होंने नंदीग्राम और भवानीपुर चुनाव का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी को दो बार हराया है।

'सरकार बदलना ही नहीं, व्यवस्था में बदलाव लक्ष्य'

मुख्यमंत्री ने कहा कि पश्चिम बंगाल में सत्ता परिवर्तन का उद्देश्य केवल योजनाओं के नाम बदलना या सरकारी कार्यालयों का रंग बदलना नहीं है। सरकार का लक्ष्य प्रशासनिक व्यवस्था में वास्तविक बदलाव लाना और राज्य के लोगों को बेहतर शासन उपलब्ध कराना है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार बंगाल के विकास, कानून-व्यवस्था और प्रशासनिक पारदर्शिता को लेकर काम करेगी। उनका कहना था कि राजनीतिक बदलाव तभी सार्थक माना जाएगा, जब उसका असर आम लोगों के जीवन में दिखाई दे।

नगर निकाय चुनावों में जीत का भरोसा

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने आगामी नगर निकाय चुनावों को लेकर भी विश्वास जताया। उन्होंने कहा कि राज्य में भाजपा को जनता का समर्थन मिल रहा है और पार्टी आने वाले चुनावों में बड़ी संख्या में सीटें जीतने में सफल होगी। कार्यक्रम में राज्य सरकार के मंत्री तापस राय, इंद्रनील खां, विधायक विजय ओझा, रितेश तिवारी, सजल घोष समेत भाजपा के कई वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे। विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस के जरिए कार्यक्रम में उन लाखों लोगों को याद किया गया, जिन्होंने देश के विभाजन के दौरान हिंसा, विस्थापन और असहनीय पीड़ा झेली। कार्यक्रम का संदेश स्पष्ट था कि इतिहास के कठिन अध्यायों को याद रखना किसी समुदाय के खिलाफ खड़ा होना नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को यह समझाना है कि हिंसा और विभाजन की कीमत आम लोगों को किस तरह चुकानी पड़ती है। विभाजन की त्रासदी की स्मृतियां आज भी बंगाल के अनेक परिवारों की व्यक्तिगत कहानियों में जीवित हैं। ऐसे में इतिहास को याद करने और उससे सीख लेने की जरूरत पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है।

ग्रेट कलकत्ता किलिंग: चार दिनों तक जलता रहा कलकत्ता कैसे शुरू हुई हिंसा और क्या था गोपाल पाठा का रोल?

16 अगस्त 1946 को 'डायरेक्ट एक्शन डे' के आह्वान के बाद भड़की हिंसा ने बंगाल को हिला दिया; हजारों लोगों की मौत, बड़े पैमाने पर विस्थापन और उसके बाद नोआखाली से बिहार तक फैली सांप्रदायिक हिंसा ने विभाजन की जमीन तैयार की, अराजकता के बीच गोपाल 'पाठा' मुखर्जी ने स्थानीय हिंदू परिवारों की सुरक्षा के लिए हथियारबंद युवाओं को संगठित किया

फोटो क्रेडिट: गूगल

भारत की आजादी से ठीक एक वर्ष पहले कलकत्ता ने इतिहास की सबसे भयावह सांप्रदायिक हिंसाओं में से एक का सामना किया। 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग के 'डायरेक्ट एक्शन डे' के आह्वान के बाद कलकत्ता में हिंसा भड़क उठी। अगले कई दिनों तक शहर के अलग-अलग हिस्सों में हत्या, आगजनी, लूटपाट और हमलों का दौर चला। हजारों लोग मारे गए और बड़ी संख्या में परिवारों को अपना घर छोड़ना पड़ा। उस समय कलकत्ता में राजनीतिक तनाव पहले से चरम पर था। मुस्लिम लीग पाकिस्तान की मांग को लेकर दबाव बना रही थी। 16 अगस्त को बड़ी राजनीतिक सभा के बाद शहर के कई हिस्सों में हालात तेजी से बिगड़े। हिंसा का सबसे ज्यादा असर उन आम परिवारों पर पड़ा, जो अचानक खुद को असुरक्षित और प्रशासन को असहाय स्थिति में पा रहे थे। इसी दौर में गोपाल चंद्र मुखर्जी, जिन्हें लोग 'गोपाल पाठा' के नाम से जानते थे, हिंदू समुदाय के स्थानीय प्रतिरोध के प्रमुख चेहरों में सामने आए। उन्होंने अपने आसपास के युवाओं को संगठित किया और हिंसा से प्रभावित हिंदू परिवारों की रक्षा के लिए मोर्चा संभाला। गोपाल पाठा का प्रभाव मुख्य रूप से मध्य कलकत्ता और आसपास के इलाकों में था। उनके साथ बड़ी संख्या में स्थानीय युवा जुड़े थे। हिंसा बढ़ने के साथ उन्होंने अपने समर्थकों को संगठित कर उन इलाकों में सुरक्षा व्यवस्था खड़ी करने की कोशिश की, जहां लोगों को हमलों का डर था। उनकी भूमिका को लेकर इतिहास में अलग-अलग मत मिलते हैं। उनके समर्थकों और परिवार से जुड़े विवरणों में उन्हें हिंदू परिवारों की रक्षा के लिए खड़े हुए व्यक्ति के रूप में याद किया जाता है। वहीं कुछ इतिहासकार उनके हथियारबंद प्रतिरोध और हिंसक कार्रवाई को भी आलोचनात्मक नजर से देखते हैं। यही वजह है कि गोपाल पाठा की कहानी को उस समय की भयावह परिस्थितियों के संदर्भ में समझना जरूरी है।

आखिर क्यों शुरू हुई थी हिंसा?

ग्रेट कलकत्ता किलिंग को समझने के लिए 1946 के राजनीतिक माहौल को समझना जरूरी है। ब्रिटिश शासन से भारत की आजादी की प्रक्रिया अंतिम दौर में पहुंच चुकी थी, लेकिन सत्ता के हस्तांतरण और देश के भविष्य को लेकर कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच गहरा मतभेद पैदा हो चुका था। मुस्लिम लीग के नेता मोहम्मद अली जिन्ना अलग मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान की मांग पर अड़े हुए थे। जुलाई 1946 में मुस्लिम लीग ने डायरेक्ट एक्शन का रास्ता अपनाने का फैसला किया और 16 अगस्त 1946 को 'Direct Action Day' मनाने का आह्वान किया। बंगाल में उस समय मुस्लिम लीग की सरकार थी और हुसैन शहीद सुहरावर्दी मुख्यमंत्री थे। सरकार ने 16 अगस्त को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया था। कलकत्ता में मुस्लिम लीग की एक बड़ी सभा ओक्टरलोनी मॉन्यूमेंट, जिसे आज शहीद मीनार कहा जाता है, के आसपास आयोजित हुई। सभा में बड़ी संख्या में लोग पहुंचे।

शहर में पहले से ही तनाव था। जुलूसों में लाठियां और अन्य हथियार दिखाई देने लगे थे। कई इलाकों में हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच अविश्वास चरम पर पहुंच चुका था। सभा के बाद स्थिति तेजी से बिगड़ी और हिंसा ने पूरे शहर को अपनी चपेट में लेना शुरू कर दिया।

कौन थे गोपाल 'पाठा' मुखर्जी?

इसी हिंसा के दौरान गोपाल चंद मुखर्जी, जिन्हें बाद में गोपाल पाठा के नाम से जाना गया, कलकत्ता के एक प्रमुख स्थानीय मजबूत व्यक्ति के रूप में सामने आए। पाठा बंगाली भाषा में बकरे के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द है। उनके परिवार का कॉलेज स्ट्रीट इलाके में मांस का कारोबार था, इसलिए उन्हें यह उपनाम मिला। वे स्थानीय स्तर पर एक प्रभावशाली व्यक्ति थे और उनके साथ बड़ी संख्या में युवा जुड़े हुए थे। विभिन्न स्रोतों में उनके साथियों की संख्या सैकड़ों, कुछ विवरणों में करीब 800 तक बताई गई है। जब शहर में हिंसा बढ़ी तो गोपाल मुखर्जी ने अपने इलाके के हिंदुओं की रक्षा के लिए युवाओं को संगठित किया। उनके समर्थकों ने लाठी, चाकू, तलवार, लोहे की रॉड और बंदूकों सहित विभिन्न हथियारों के साथ प्रतिरोध किया। गोपाल पाठा की भूमिका हालांकि विवादों से मुक्त नहीं है। उन्हें उनके समर्थक हिंदुओं के रक्षक के रूप में याद करते हैं, जबकि इतिहासकारों का एक वर्ग उन्हें हिंसक प्रतिशोध में शामिल स्थानीय गैंग के नेता के तौर पर देखता है। इसलिए उनके योगदान का मूल्यांकन करते समय दोनों पक्षों को सामने रखना जरूरी है।

गांधी से मुलाकात और शांति की अपील

गोपाल पाठा का नाम महात्मा गांधी के साथ हुई उनकी मुलाकात के कारण भी चर्चा में आता है। हालांकि यह मुलाकात 1947 में कलकत्ता में शांति स्थापित करने के गांधी के प्रयासों के दौरान हुई थी, न कि 1946 की ग्रेट कलकत्ता किलिंग के दौरान गांधी को बचाने की घटना के रूप में। गांधी ने कलकत्ता में दोनों समुदायों से हिंसा समाप्त करने और हथियार छोड़ने की अपील की थी। गोपाल पाठा से भी हथियार छोड़ने को कहा गया। उपलब्ध विवरणों के अनुसार गोपाल ने अपने इलाके के लोगों की सुरक्षा का सवाल उठाया और मुस्लिम पक्ष के हथियार छोड़ने की मांग भी रखी। यही प्रसंग गोपाल पाठा के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पहलू सामने लाता है—एक ऐसा स्थानीय नेता, जिसने अपने समुदाय की सुरक्षा को अपनी प्राथमिकता माना और बाद में गांधी के शांति प्रयासों के सामने भी अपनी बात स्पष्ट रूप से रखी।

इतिहास का दर्दनाक अध्याय

ग्रेट कलकत्ता किलिंग के बाद नोआखाली, बिहार और देश के अन्य हिस्सों में सांप्रदायिक हिंसा ने हालात को और गंभीर बना दिया। इन घटनाओं ने हिंदू-मुस्लिम संबंधों में गहरी खाई पैदा की और अंततः 1947 के विभाजन की त्रासदी को और भयावह बना दिया।

गोपाल पाठा मुखर्जी आज भी बंगाल के इतिहास में एक विवादित लेकिन प्रभावशाली नाम हैं। हिंदू समाज के एक वर्ग की स्मृति में वे उस कठिन दौर में अपनी जान जोखिम में डालकर हिंदू परिवारों की रक्षा के लिए खड़े होने वाले व्यक्ति और प्रतिरोध के प्रतीक हैं।

ग्रेट कलकत्ता किलिंग की स्मृति हमें यह याद दिलाती है कि राजनीतिक संघर्ष और सांप्रदायिक हिंसा की सबसे बड़ी कीमत हमेशा आम लोगों को चुकानी पड़ती है। इतिहास के इस अध्याय को याद करना इसलिए जरूरी है, ताकि उस दौर में मारे गए और विस्थापित हुए लोगों की पीड़ा आने वाली पीढ़ियों तक पहुंच सके।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 80वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ऐतिहासिक लाल किले की प्राचीर से लगातार 13वीं बार तिरंगा झंडा फहराया।

मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने 15 अगस्त 2026 को कोलकाता के रेड रोड पर 80वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया। मुख्यमंत्री के रूप में यह उनका पहला स्वतंत्रता दिवस समारोह था।

हावड़ा सिटी पुलिस ने मॉडलिंग के नाम पर नाबालिग लड़कियों को ब्लैकमेल करने वाले बड़े गिरोह का किया भंडाफोड़

हावड़ा सिटी पुलिस के डिटेक्टिव विभाग ने एक नाबालिग लड़की को मॉडलिंग फोटोशूट के नाम पर ब्लैकमेल और उगाही के मामले की जांच करते हुए एक बड़े अपराध गिरोह का पर्दाफाश किया है। इस मामले में अब तक एक महिला समेत पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

डिप्टी कमिश्नर (डिटेक्टिव विभाग) राहुल मिश्रा ने बताया कि बारुईपुर निवासी अतनु अगुआन उर्फ जीतू चक्रवर्ती अपनी गर्लफ्रेंड सोनाली कोयाल के जरिए फेसबुक पर कम उम्र की लड़कियों को मॉडलिंग फोटोशूट का झांसा देता था। इसके बाद अतनु और उसके साथी लड़कियों को विभिन्न होटलों में ले जाकर उनकी आपत्तिजनक एवं निर्वस्त्र तस्वीरें खींचते थे। बाद में उन तस्वीरों को सोशल मीडिया पर वायरल करने की धमकी देकर पीड़िताओं को ब्लैकमेल किया जाता था। उनसे कई किश्तों में भारी रकम के साथ-साथ सोने-चांदी के आभूषण भी वसूले जाते थे। पुलिस जांच में सामने आया है कि इस गिरोह ने इस तरह लाखों रुपये की उगाही की। कुछ दिन पहले एक नाबालिग लड़की ने हावड़ा सिटी पुलिस के साइबर सेल में शिकायत दर्ज कराई थी। उसी शिकायत की जांच के दौरान पुलिस इस बड़े गिरोह तक पहुंची।

पुलिस ने इस मामले में गिरोह के सरगना अतनु अगुआन उर्फ जीतू चक्रवर्ती, उसकी गर्लफ्रेंड सोनाली कोयाल, राकेश मंडल, राजीव मंडल और राजेश पात्र को गिरफ्तार किया है। जांच में यह भी सामने आया है कि गिरोह के सदस्य नाबालिग लड़कियों को फोटोशूट के बहाने होटलों में ले जाते थे, उनकी आपत्तिजनक तस्वीरें खींचते थे और कई पीड़िताओं के साथ ब्लैकमेल करने के अलावा दुष्कर्म भी किया गया।

पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ पोक्सो (POCSO), दुष्कर्म, उगाही और ब्लैकमेल समेत विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया है। अब तक इस गिरोह की 9 नाबालिग लड़कियों के शिकार होने की पुष्टि हुई है। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि इस गिरोह में और कौन-कौन लोग शामिल थे।

तारकेश्वर में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर एडिशनल एसीपी शांतनु झा की अपील

हुगली के तारकेश्वर में सावन की दूसरी सोमवारी के मौके पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की गई है। इसी बीच हुगली ग्रामीण पुलिस के एडिशनल एसीपी शांतनु झा ने श्रद्धालुओं से शांतिपूर्वक और अनुशासन के साथ मंदिर की ओर बढ़ने की अपील की।एडिशनल एसीपी शांतनु झा ने श्रद्धालुओं से पुलिस प्रशासन का सहयोग करने, भीड़ के दौरान सावधानी बरतने और किसी भी तरह की अफवाह पर ध्यान नहीं देने की अपील की। उन्होंने श्रद्धालुओं से धैर्य और संयम बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि सभी के सहयोग से मंदिर परिसर में व्यवस्था सुचारु रूप से बनाए रखी जा सकती है।

स्वतंत्रता दिवस विशेष: समर्थ और स्वावलंबी भारत के नव-निर्माण का संकल्प

"स्वतंत्रता केवल अतीत का गौरव गान नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ी को एक सशक्त, समृद्ध और समावेशी राष्ट्र सौंपने का पवित्र संकल्प है।" 15 अगस्त का यह पावन अवसर हमारे लोकतंत्र की जीती-जागती चेतना और 140 करोड़ हिन्दुस्तानियों के अखंड विश्वास का उत्सव है। आज जिस स्वतंत्र गगन के नीचे हम सांस ले रहे हैं, उसकी नींव में मां भारती के उन अनगिनत वीर-वीरांगनाओं और हुतात्माओं का त्याग, तपस्या और बलिदान निहित है, जिन्होंने हमारे 'आज' के लिए अपना 'कल' कुर्बान कर दिया था। क्रांतियों और संकल्पों का पावन पर्व अहिंसा के मार्ग से लेकर क्रांति की ज्वाला तक - महात्मा गांधी, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, अब्दुल हमीद, रामप्रसाद बिस्मिल, खुदीराम बोस, सुभाष चंद्र बोस, रानी लक्ष्मीबाई और सरदार पटेल जैसी महान विभूतियों ने हमें सिखाया कि जब 140 करोड़ संकल्प एक दिशा में बढ़ते हैं, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं रहता। 1947 में स्वतंत्रता के समय अनेक वैश्विक विशेषज्ञों को भारत के स्थायित्व पर संदेह था, लेकिन भारत की सामूहिक प्रबल इच्छाशक्ति, दूरदर्शिता और लोकतांत्रिक मूल्यों ने दुनिया की तमाम आशंकाओं को निर्मूल सिद्ध कर दिया।

- बदलता भारत
- वैश्विक पटल पर अमिट छाप आर्थिक महाशक्ति: अभावों के दौर से निकलकर आज भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शीर्ष पर खड़ा है।
- तकनीक और अंतरिक्ष में डंका: चंद्रयान अभियानों से लेकर डिजिटल इंडिया और यूपीआई क्रांति तक, भारत तकनीक के क्षेत्र में वैश्विक दिशा तय कर रहा है।
- आत्मनिर्भरता की ओर मजबूत कदम: कृषि से लेकर रक्षा उत्पादन तक, 'मेक इन इंडिया' के मंत्र ने राष्ट्र को पूरी तरह स्वावलंबी बनाया है।
- नागरिक कर्तव्य: 'राष्ट्र-प्रथम' ही एकमात्र मार्ग स्वतंत्रता केवल अधिकारों की गारंटी नहीं देती, बल्कि 'कर्तव्य पथ' पर चलने की ज़िम्मेदारी भी सौंपती है। आज जब हम एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं, तो हमारी प्राथमिकताएँ पूरी तरह स्पष्ट होनी चाहिए।
- सामाजिक एकता: विविधता में एकता हमारी सबसे बड़ी ताकत है। संकीर्णताओं से ऊपर उठकर 'राष्ट्र-प्रथम' को अपनाएं।
- समावेशी विकास: विकास की किरणें समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक निर्बाध पहुँचनी चाहिए।
- सतत और हरित भविष्य: पर्यावरण संरक्षण को अपनी दैनिक जीवनशैली का हिस्सा बनाना हर नागरिक का दायित्व है।

आइए, हम अपनी पुरानी उपलब्धियों पर संतोष करने के बजाय, नए शिखरों को छूने का संकल्प लें। यह समय केवल आकांक्षाओं का नहीं, बल्कि पुरुषार्थ का है। यदि हम अपने-अपने क्षेत्र में पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी और राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि रखकर कार्य करेंगे, तो विकसित भारत का सपना हमारा यथार्थ बनेगा। जय हिंद! जय भारत!

-सुनील कुमार
उप महानिरीक्षक, के.रि.पु. बल, रेंज रांची।

संक्षिप्त डायरी

दांडी यात्रा से लेकर 'भारत छोड़ो आंदोलन' तक अंग्रेजों से लड़े पंडित अच्युतानंद

पटना (एजेंसी) सुपौल के पंडित अच्युतानंद झा, जिन्होंने दांडी यात्रा और भारत छोड़ो आंदोलन में अपने प्राणों की आहुति दी. उनके देशभक्ति के जज्बे ने अनगिनत युवाओं को प्रेरित किया है. शरीर भले ही नश्वर हो, लेकिन इंसान के कर्म और कीर्ति उसे हमेशा अमर कर देते हैं. सुपौल जिले के सदर प्रखंड अंतर्गत जगतपुर गांव के निवासी स्वर्गीय पंडित अच्युतानंद झा का नाम ऐसे ही प्रखर और महान स्वतंत्रता सेनानियों में शुमार है. दांडी यात्रा से लेकर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन तक, उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ जमकर लोहा लिया. पारिवारिक जिम्मेदारियों से ऊपर देश को तरजीह देने वाले इस अमर सेनानी का संघर्ष आज भी युवाओं में राष्ट्रप्रेम का जज्बा भरता है. बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति व कूट-कूट कर भरी थी देशभक्ति स्व. अच्युतानंद झा का जन्म 15 अगस्त 1886 को तत्कालीन भागलपुर जिले (अब सुपौल अनुमंडल) से करीब दस किलोमीटर दूर स्थित जगतपुर गांव में हुआ था. उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव के ही विद्यालयों में संपन्न हुई. बचपन से ही वे गहरी धार्मिक प्रवृत्ति के धनी थे, लेकिन जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ी, उनके भीतर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह और देश को स्वतंत्र कराने का जुनून भी उफान मारने लगा. दांडी यात्रा से 'भारत छोड़ो आंदोलन' तक निभाई सक्रिय भूमिका पारिवारिक दायित्वों को किनारे रखकर उन्होंने राष्ट्रहित को सर्वोपरि माना और स्वाधीनता संग्राम में कूद दांडी यात्रा में भागीदारी: अंग्रेजी शासन की मुखालफत करते हुए उन्होंने दांडी यात्रा में सक्रिय रूप से भाग लिया. अपने क्रांतिकारी तेवरों के कारण वे हमेशा ब्रिटिश पुलिस की आंखों की किरकिरी बने रहे. भारत छोड़ो आंदोलन और जेल यात्रा: 9 अगस्त 1942 को जब महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' का बिगुल फूंका, तो वे इसमें प्रमुखता से शामिल हुए. इस बगावत के कारण अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया. यातनाओं के आगे नहीं झुके: जेल में उन्हें भयंकर यातनाएं दी गईं, लेकिन उनका हौसला डिगा नहीं. इस आंदोलन में उनके साथ स्वतंत्रता सेनानी स्व. जयराम मिश्र सहित कई अन्य साथी भी कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे थे.

जन्म और पुण्यतिथि का ऐतिहासिक घटनाओं से अद्भुत संयोग स्व. अच्युतानंद झा के जीवन का एक बेहद खास पहलू उनकी जन्म और निधन की तिथियां हैं, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास से सीधे जुड़ती हैं:

उनका जन्म 15 अगस्त को हुआ था (15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ). उनका निधन 9 अगस्त 1971 को हुआ (9 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ था). आज स्वतंत्रता सेनानी स्व. पंडित अच्युतानंद झा का नाम प्रखंड कार्यालय के शिलापट्ट पर स्वर्णाक्षरों में अंकित है. लोग जब भी इस शिलापट्ट को देखते हैं, इस महान रणबांकुरे के त्याग, साहस और समर्पण को शत-शत नमन करते हैं.

पटना के गांधी मैदान में धूमधाम से मना स्वतंत्रता दिवस, सम्राट चौधरी ने फहराया

पटना (एजेंसी) बिहार की राजधानी पटना के ऐतिहासिक गांधी मैदान में स्वतंत्रता दिवस 2026 समारोह पूरे उत्साह और देशभक्ति के माहौल में मनाया गया. मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने सुबह 9 बजे गांधी मैदान में तिरंगा फहराकर राष्ट्रध्वज को सलामी दी. मुख्यमंत्री के रूप में गांधी मैदान में यह उनका पहला ध्वजारोहण रहा. पिछली बार वह यहां उपमुख्यमंत्री के रूप में स्वतंत्रता दिवस समारोह में शामिल हुए थे. 80वें स्वतंत्रता वर्ष में प्रवेश पर मुख्यमंत्री का संदेश मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बिहारवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज देश स्वतंत्रता के 80वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है. उन्होंने कहा कि यह गौरवशाली अवसर उन वीर स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, तपस्या और बलिदान को याद करने का है, जिनके संघर्ष से देश को स्वतंत्रता मिली. विकसित बिहार के निर्माण का लिया संकल्प मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में बिहार को मिल रहे सहयोग एवं संसाधनों का सदुपयोग करते हुए सभी मिलकर समृद्ध बिहार के निर्माण के संकल्प को साकार करेंगे. उन्होंने कहा कि विकास की यात्रा में समाज के हर वर्ग की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए बिहार को नई ऊंचाइयों तक ले जाना सरकार का लक्ष्य है. उन्होंने लोगों से राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए सशक्त, समृद्ध और विकसित भारत के निर्माण के संकल्प के साथ आगे बढ़ने की अपील की. गांधी मैदान में 1500 जवानों ने संभाली सुरक्षा स्वतंत्रता दिवस समारोह को लेकर गांधी मैदान और आसपास के इलाकों में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किये गये. गांधी मैदान क्षेत्र में करीब 1500 पुलिस जवानों की तैनाती की गयी. सुरक्षा व्यवस्था के तहत चप्पे-चप्पे पर पुलिस बल मौजूद रहा. सीसीटीवी कैमरों और ड्रोन के माध्यम से भी पूरे इलाके की निगरानी की गयी. प्रतिनियुक्त अधिकारी और जवान सुबह छह बजे से ही अपने निर्धारित स्थानों पर तैनात हो गये थे. समारोह में आने वाले लोगों के लिए अलग-अलग प्रवेश द्वार बनाये गये थे. विभागों की झांकियों में दिखा बिहार का विकास स्वतंत्रता दिवस समारोह में कुल 13 विभागों की झांकियां निकाली गयीं. इन झांकियों के माध्यम से बिहार की प्राकृतिक विरासत, शिक्षा, कृषि, महिला सशक्तीकरण, ऊर्जा, उद्योग, सुरक्षा और विभिन्न सरकारी योजनाओं की उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया. मुंडेश्वरी धाम और टाइगर रिजर्व की दिखी झलक पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग की झांकी कैमूर के प्रसिद्ध मां मुंडेश्वरी धाम, भीमबांध वन्यजीव अभयारण्य और वाल्मीकि टाइगर रिजर्व की प्राकृतिक सुंदरता पर आधारित रही. झांकी के माध्यम से बिहार की समृद्ध प्राकृतिक और धार्मिक विरासत को दर्शाया गया. विरासत से डिजिटल शिक्षा तक दिखी बिहार की तस्वीर कला, संस्कृति एवं युवा विभाग की झांकी ज्ञान भारतम् के माध्यम से विरासत संरक्षण और प्राचीन पांडुलिपियों के डिजिटाइजेशन को प्रदर्शित किया गया. कृषि विभाग की झांकी में आधुनिक और स्मार्ट तकनीक से खेती की तस्वीर दिखाई गयी. वहीं बिहार शिक्षा परियोजना परिषद और शिक्षा विभाग की झांकी में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था तथा मुख्यमंत्री की योजनाओं को केंद्र में रखा गया. गांधी मैदान में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर निकाली गई झांकियों में कृषि विभाग की स्मार्ट खेती आधारित झांकी ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया. झांकी में आधुनिक कृषि तकनीक, वैज्ञानिक खेती और किसानों की बदलती भूमिका को आकर्षक मॉडल के माध्यम से प्रदर्शित किया गया. खेत, फसल और किसानों के साथ आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल को दर्शाते हुए झांकी ने कम लागत में बेहतर उत्पादन और किसानों की आय बढ़ाने का संदेश दिया. झांकी में ग्रामीण परिवेश और खेती से जुड़ी आकर्षक कलाकृतियों के जरिए लोगों को आधुनिक एवं तकनीक आधारित कृषि की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया. पशुपालन और जीविका की झांकी, आत्मनिर्भरता का दिया संदेश गांधी मैदान में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर निकाली गई झांकी में जीविका और पशुपालन विभाग की थीम को आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया गया. झांकी में पशु संसाधन केंद्र, पशु स्वास्थ्य सेवाओं, पशु आहार, टीकाकरण और आधुनिक पशुपालन के माध्यम से ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाने का संदेश दिया गया. झांकी को फूलों और आकर्षक सजावट से सजाया गया था, जबकि इसमें ग्रामीण महिलाओं और पशुपालकों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को प्रदर्शित किया गया.

बिहार में परीक्षा व्यवस्था होगी और सख्तः हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज की अध्यक्षता में बनेगी कमेटी, 5 लाख करोड़ निवेश का भी ऐलान

पटना (एजेंसी) मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने स्वतंत्रता दिवस पर बिहार के विकास का विस्तृत रोडमैप प्रस्तुत किया. इसमें 5 लाख करोड़ के निवेश लक्ष्य, 30 हजार भूमिहीन परिवारों को जमीन, हर परिवार में उद्यमी तैयार करने की योजना, मुफ्त बिजली, परीक्षा व्यवस्था में सुधार और स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार की घोषणाएं शामिल हैं. स्वतंत्रता दिवस के मौके पर गांधी मैदान में आयोजित राजकीय समारोह में मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बिहार के विकास को लेकर सरकार की योजनाओं और आगामी लक्ष्यों का रोडमैप सामने रखा. मुख्यमंत्री ने उद्योग, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सिंचाई, पर्यटन और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में कई बड़े फैसलों और योजनाओं की जानकारी दी. उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य सुरक्षित, समृद्ध और विकसित बिहार बनाना है. 5 लाख करोड़ रुपये के निवेश का लक्ष्य मुख्यमंत्री ने कहा कि नवंबर तक बिहार में करीब 5 लाख करोड़ रुपये का निजी निवेश लाने का लक्ष्य रखा गया है. इसके लिए औद्योगिक नीति का विस्तार किया गया है. सेमीकंडक्टर और आईटी क्षेत्र के लिए नई नीतियां भी तैयार की गयी हैं. राज्य में 100 से अधिक औद्योगिक क्षेत्रों के विकास, करीब 10 हजार एकड़ औद्योगिक जमीन की स्वीकृति और 14,100 एकड़ जमीन के अधिग्रहण की प्रक्रिया चल रही है. स्थानीय उत्पादों की खरीद को मिलेगी प्राथमिकता सरकार बिहार में बनने वाले उत्पादों को बढ़ावा देने की दिशा में भी काम कर रही है. मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार की खरीद में कम से कम 30 प्रतिशत स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता दी जाएगी. उन्होंने बताया कि एक दिन में पांच स्टील प्लांट लगाने के लिए करीब 51 हजार करोड़ रुपये के एमओयू भी हुए हैं. 30 हजार भूमिहीन परिवारों को जमीन स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राज्य के 30 हजार भूमिहीन गरीब परिवारों को बासगीत पर्चा के रूप में जमीन देने की बात मुख्यमंत्री ने कही. वहीं, राशन कार्ड से वंचित करीब एक करोड़ लोगों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है. मुख्यमंत्री के अनुसार पिछले एक महीने में 30 लाख से अधिक लोगों को राशन कार्ड से जोड़ा जा चुका है. हर परिवार में एक उद्यमी तैयार करने का लक्ष्य मुख्यमंत्री ने कहा कि स्टार्टअप, उद्यमी योजना और लघु उद्यमी योजना के जरिए करीब 8 लाख लोगों को सहयोग दिया गया है. अब सरकार का लक्ष्य राज्य के 3.25 करोड़ से अधिक परिवारों में कम से कम एक उद्यमी तैयार करना है. मुख्यमंत्री ने कहा कि बिजली की खपत 950 मेगावाट से बढ़कर 9475 मेगावाट तक पहुंच गयी है. सरकार अमीर और गरीब सभी परिवारों को हर महीने 125 यूनिट मुफ्त बिजली दे रही है. मुख्यमंत्री ने इसे बिहार के बिजली क्षेत्र में बड़ा बदलाव बताया. छह महीने में शुरू होंगी पांच और चीनी मिलें मुख्यमंत्री ने कहा कि रामनगर की चीनी मिल शुरू हो चुकी है. अगले छह महीने में पांच और चीनी मिलों पर काम शुरू करने का लक्ष्य है. बिहार में कुल 25 चीनी मिल स्थापित करने की योजना है. उन्होंने मखाना, जर्दालू आम समेत बिहार के स्थानीय उत्पादों को देश और दुनिया के बाजार तक पहुंचाने की बात कही. मुख्यमंत्री ने कहा कि मखाना अब अंतरराष्ट्रीय स्तर का सुपर फूड बन चुका है. अस्पतालों में 36 तरह के ऑपरेशन की सुविधा स्वास्थ्य व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए सभी प्रखंडों के 30 बेड वाले अस्पतालों और जिला अस्पतालों को मजबूत करने की बात कही गयी. मुख्यमंत्री ने कहा कि जिला अस्पतालों में 36 तरह के ऑपरेशन की व्यवस्था की जाएगी. 15 अगस्त के बाद जिले से मरीजों को अनावश्यक रूप से रेफर करने वाले सिविल सर्जनों पर कार्रवाई की जाएगी. मुख्यमंत्री ने 15 जिलों में मेडिकल कॉलेज और अस्पतालों को पीपीपी मॉडल पर संचालित करने की योजना की जानकारी दी. उन्होंने दावा किया कि दवा आपूर्ति के मामले में बिहार पिछले 22 महीनों से देश में पहले स्थान पर है.

जब थानेदार को पटक कर क्रांतिकारियों ने छीन ली चाबी, गोलियों की बौछार के बीच फहराया तिरंगा

पटना (एजेंसी) 1942 की अगस्त क्रांति के दौरान अररिया जिले के कुसाकांटा प्रखंड के वीर सपूतों ने अंग्रेजी हुकूमत के दांत खट्टे कर दिए थे. थानेदार को पटक कर चाबी छीनने और गोलियों की बौछार के बीच तिरंगा फहराने की उनकी अनूठी शौर्य गाथा यहां भारत के स्वाधीनता संग्राम में अररिया जिले (सिकटी विधानसभा) के कुसाकांटा प्रखंड का भी अहम योगदान रहा है. गुलामी की जंजीरों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए यहां के रणबांकुरों ने अंग्रेजी हुकूमत के दांत खट्टे कर दिए थे. 1942 की अगस्त क्रांति के दौरान यहां के स्वतंत्रता सेनानियों ने ब्रिटिश पुलिस की गोलियों की परवाह किए बिना न सिर्फ कुआड़ी पुलिस स्टेशन (तत्कालीन ओपी) पर तिरंगा फहराया था, बल्कि गिरफ्तार किए गए अपने साथियों को भी थानेदार को पीटकर छुड़ा लिया था. डाकघर और देशी शराब की दुकानें थीं निशाने पर जब पूरे देश में 1942 की अगस्त क्रांति चरम पर थी, तब कुसाकांटा और कुआड़ी के क्रांतिकारी भी उबल पड़े थे. 21 अगस्त को रामेश्वर यादव, कमलानंद विश्वास, विश्वनाथ गुप्ता, सीताराम गुप्ता, रामाश्रय हलवाई, रघुनंदन भगत, गोधुली ठाकुर, हरिलाल झा, नागेश्वर झा, अनुपलाल पासवान और रामचंद्र गुप्ता जैसे युवाओं की अगुवाई में विशाल जत्था निकला. आजादी के इन दीवानों ने अंग्रेजी शासन को चोट पहुंचाने के लिए सबसे पहले कुआड़ी और कुसाकांटा के डाकघर, बड़ी व छोटी कचहरी और देशी शराब की दुकानों में जमकर तोड़फोड़ और आगजनी की घटना को अंजाम दिया. थाना लूटने की बन रही थी योजना, पुलिस ने कर लिया गिरफ्तार तोड़फोड़ के बाद सभी सेनानी 'मोती लाल राष्ट्रीय पाठशाला' (स्मारक भवन) में जमा हुए. वहां वे कुआड़ी थाना लूटने और उसे आग के हवाले करने की योजना बना ही रहे थे कि इसकी भनक अंग्रेजी पुलिस को लग गई. पुलिस की एक टुकड़ी ने मौके पर पहुंचकर छापेमारी की और रामेश्वर हलवाई, रामेश्वर यादव, विश्वनाथ गुप्ता, कमलानंद विश्वास, सीताराम गुप्ता, बासो साह उर्फ बसंत लाल साह, भगवान लाल साह और कुशेश्वर पासवान शास्त्री समेत कई प्रमुख चेहरों को गिरफ्तार कर हवालात में डाल दिया. और साथियों को छुड़ाने के लिए सीधे कुआड़ी थाने की ओर कूच कर गए. उस वक्त कुआड़ी थाने के तत्कालीन जमादार राम नगीना पांडेय ने पुलिस बल के साथ इस हुजूम को रोकने की कोशिश की. लेकिन भीड़ इतनी आक्रोशित थी कि उन्होंने राम नगीना पांडेय को उठाकर जमीन पर पटक दिया. इसके बाद क्रांतिकारियों ने कार्यालय और हवालात की चाबी छीनकर अपने साथियों को आजाद करा लिया. इसी बीच मौका पाकर कमलानंद विश्वास और रामेश्वर यादव ने कुछ साथियों के साथ थाने की छत पर चढ़कर शान से तिरंगा फहरा दिया. बौखलाई पुलिस ने बरसाई गोलियां, नेपाल में भूमिगत हुए क्रांतिकारी थानेदार की पिटाई, हवालात टूटने और तिरंगा फहराए जाने से अंग्रेजी पुलिस बौखला गई. उन्होंने छिपकर निहत्थे आजादी के दीवानों पर गोलियों की बौछार कर दी. इस गोलीबारी में कुआड़ी, कुसाकांटा, बखरी, परवत्ता, तीरा खारदह, डैनिया और उफरैल के कई रणबांकुरे गंभीर रूप से जख्मी हो गए. मौके से दर्जनों लोगों की गिरफ्तारी हुई, जबकि कई क्रांतिकारी जान बचाकर पड़ोसी देश नेपाल भाग गए और वहां भूमिगत होकर आंदोलन चलाते रहे. इन्हीं अनगिनत बलिदानों और संघर्षों का ही परिणाम है कि आज हम आजाद भारत में खुली सांस ले रहे हैं.

बिहार के इन कर्मचारियों को मिलेगी 3 महीने की सैलरी, सरकार ने जारी किए 1127 करोड़

पटना (एजेंसी) बिहार के विश्वविद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों, कर्मचारियों के वेतन और पेंशन भुगतान के लिए 1127.34 करोड़ रुपये राशि जारी कर दी है. इस फैसले से जून से अगस्त तक का बकाया वेतन मिलने के साथ गेस्ट टीचर्स को भी मानदेय मिलेगा. बिहार सरकार ने विश्वविद्यालयों में काम करने वाले शिक्षकों और कर्मचारियों के वेतन और पेंशन के भुगतान के लिए 1127 करोड़ 34 लाख रुपये जारी किया है. इस राशि से जून से अगस्त तक का वेतन और पेंशन दिया जाएगा. इसमें गेस्ट शिक्षकों के मानदेय की राशि भी शामिल है. जून से अगस्त तक का वेतन और पेंशन मिलेगा जारी की गई राशि का इस्तेमाल विश्वविद्यालयों में काम कर रहे शिक्षकों और कर्मचारियों के वेतन के साथ रिटायर हो चुके कर्मचारियों और शिक्षकों की पेंशन देने में किया जाएगा. जून, जुलाई और अगस्त के वेतन-पेंशन का भुगतान इसी राशि से किया जाना है. गेस्ट शिक्षकों को दिए जाने वाले मानदेय की रकम भी इसमें शामिल है. इससे राज्य के अलग-अलग विश्वविद्यालयों में वेतन और पेंशन भुगतान का रास्ता साफ होगा. सभी विश्वविद्यालयों को भेजी गई राशि उच्च शिक्षा विभाग के उप सचिव शिशिर कुमार मिश्र ने शुक्रवार को सभी विश्वविद्यालयों को राशि जारी करने की प्रक्रिया पूरी की. उन्होंने संबंधित कुलसचिवों को पत्र भेजकर शिक्षकों और कर्मचारियों के वेतन के साथ पेंशन का भुगतान सुनिश्चित करने को कहा है. पत्र के अनुसार, अलग-अलग विश्वविद्यालयों को उनकी जरूरत के हिसाब से राशि दी गई है. बिहार की ताजा खबरों के लिए क्लिक करें किस विश्वविद्यालय को कितनी राशि मिली पटना विश्वविद्यालय को 77.65 करोड़ रुपये और मगध विश्वविद्यालय को 162.03 करोड़ रुपये दिए गए हैं. बीआरए बिहार विश्वविद्यालय को 162.15 करोड़ रुपये, जबकि जय प्रकाश विश्वविद्यालय को 77.61 करोड़ रुपये की राशि मिली है. वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय को 105.14 करोड़ रुपये और बीएन मंडल विश्वविद्यालय को 84.76 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं. तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय को 80.86 करोड़ रुपये दिए गए हैं. ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय को सबसे अधिक 165.22 करोड़ रुपये की राशि मिली है. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय को 40.66 करोड़ रुपये दिए गए हैं. मौलाना मजहरुल हक अरबी एवं फारसी विश्वविद्यालय को 3.03 करोड़ रुपये, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय को 102.72 करोड़ रुपये और पूर्णिया विश्वविद्यालय को 27.86 करोड़ रुपये मिले हैं. मुंगेर विश्वविद्यालय के लिए 37.65 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं.

जब रामेश्वर बाबू ने सैंडिस कंपाउंड में यूनियन जैक हटाकर फहराया तिरंगा

पटना (एजेंसी) स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत जीर्णोद्धार हुए जयप्रकाश उद्यान के टीले का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से गहरा नाता है. यहीं स्वतंत्रता सेनानी रामेश्वर नारायण अग्रवाल ने ब्रिटिश झंडे की जगह तिरंगा फहराकर ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती दी थी. उनकी शौर्य गाथा आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणा है, भले ही शहर में उनकी यादें धूमिल पड़ रही हों. स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत भागलपुर के जयप्रकाश उद्यान (सैंडिस कंपाउंड) में जिस टीले का जीर्णोद्धार 'नेहरू मेमोरियल' के रूप में हुआ है, उसका भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से गहरा और ऐतिहासिक नाता है. यह वही पवित्र जगह है, जहां स्वतंत्रता सेनानी रामेश्वर नारायण अग्रवाल (रामेश्वर बाबू) ने अंग्रेजी हुकूमत की आंखों में धूल झोंकते हुए ब्रिटिश झंडे 'यूनियन जैक' की जगह भारत का तिरंगा फहरा दिया था. भागलपुर नगरपालिका के दूसरे चेयरमैन और समाज सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाले रामेश्वर बाबू की कहानी आज की नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा है, भले ही प्रशासनिक उदासीनता के कारण शहर में उनकी यादें मिटती जा रही हों. बीएचयू से स्वतंत्रता संग्राम तक का सफर और ऐतिहासिक चुनावी जीत नयाबाजार मोहल्ले के रहने वाले रामेश्वर बाबू वर्ष 1922 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के छात्र थे. महामना मदन मोहन मालवीय से प्रेरित होकर वे आई.ए. की पढ़ाई पूरी करने के बाद सीधे आजादी की लड़ाई में कूद पड़े. दीप बाबू का मिला साथ: भागलपुर में प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी दीप नारायण सिंह ने उनकी प्रतिभा को पहचाना. जमींदार को दी मात: दीप बाबू ने उन्हें बिहार की अंतरिम सरकार के प्रथम लेजिस्लेटिव काउंसिल चुनाव में कांग्रेसी उम्मीदवार बनाया. उनका मुकाबला बड़े जमींदार बाबू तिलकधारी लाल से था, जिनके समर्थन में खुद दरभंगा महाराज प्रचार करने आए थे. इसके बावजूद नौजवान रामेश्वर बाबू ने शानदार जीत दर्ज की और काउंसिल में कांग्रेस पार्टी के मुख्य सचेतक बने. 1929 का वह साहसिक दिन: जब यूनियन जैक से ऊंचा लहराया तिरंगा आजादी की लड़ाई में रामेश्वर बाबू 1922 से 1945 के बीच कई बार जेल गए, लेकिन सबसे ऐतिहासिक घटना 1929 में हुई: झंडे पर विवाद: सैंडिस कंपाउंड में ब्रिटिश सरकार और जनता के सहयोग से एक प्रदर्शनी आयोजित हुई. तत्कालीन जिलाधिकारी इस बात पर अड़े थे कि टीले पर सिर्फ 'यूनियन जैक' फहराया जाएगा. समझौता और बगावत: तत्कालीन आयुक्त पी.सी. सेन से समझौता हुआ कि टीले पर दोनों झंडे लगेंगे. लेकिन नगरपालिका चेयरमैन रामेश्वर बाबू ने जनता के प्रतिनिधियों के साथ मिलकर भारत का तिरंगा, ब्रिटिश झंडे से कहीं अधिक ऊंचाई पर फहरा दिया. ब्रिटिश संसद में हड़कंप: इस घटना की गूंज पूरी दुनिया के अखबारों में सुनाई दी. ब्रिटिश संसद की आपात बैठक बुलानी पड़ी और भागलपुर के तत्कालीन जिलाधिकारी व आयुक्त को मुअत्तल (सस्पेंड) कर दिया गया. उसी टीले पर नेहरू जी ने फेंकी थी चांदी की कुर्सी इसी ऐतिहासिक टीले के नीचे आज अशोक स्तंभ का खूबसूरत द्वार बना है. वर्ष 1947 में देश आजाद होने के बाद जब प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भागलपुर आए, तो उन्होंने इसी टीले पर तिरंगे के नीचे जनसभा को संबोधित किया था. स्थानीय किस्सों के अनुसार, जब नेहरू जी के बैठने के लिए वहां चांदी की कुर्सी लगाई गई, तो वे नाराज हो गए और कुर्सी उछालकर आम जनता के बीच सामान्य रूप से भाषण दिया था. रामेश्वर बाबू का समकालीन बड़े नेताओं जैसे डॉ. श्रीकृष्ण सिंह, जगजीवन राम और डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह से निकट का संबंध था. देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद उनसे इतने आत्मीय थे कि पत्रों में भी उन्हें 'तुम' कहकर संबोधित करते थे. 28 वर्षों तक चेयरमैन: वे 28 वर्षों तक भागलपुर नगरपालिका के चेयरमैन रहे. उनके ही कार्यकाल (1946) में भागलपुर के वार्ड नंबर 18 (राय गोपाल सरकार लेन) में नमूने के तौर पर पहली 'आरसीसी (पक्का) सड़क' बनवाई गई थी, जो 60-65 सालों तक 09 जुलाई 1974 को भागलपुर में ही अंतिम सांस लेने वाले इस महानायक की यादें आज धुंधली पड़ गई हैं. चुनिहारी टोला की सड़क का नाम 'रामेश्वर नारायण अग्रवाल पथ' रखा गया था, लेकिन 90 के दशक में उसका शिलापट्ट नाले में गिर गया, जिसे नगर निगम ने आज तक दोबारा नहीं लगाया. वर्तमान में सिर्फ रामानंदी देवी हिंदू अनाथालय के कार्यालय में सचिवों की सूची में उनका नाम पहले स्थान पर अंकित है. इतिहास के ऐसे नायकों को सम्मान दिलाना और उनकी यादों को सहेजना आज प्रशासन और समाज दोनों की जिम्मेदारी है.

वनडे वर्ल्ड कप 2027: गांधी जयंती पर होगा वर्ल्ड कप का आगाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया की मेजबानी में होने वाले आईसीसी वर्ल्ड कप 2027 2027 को लेकर बड़ी जानकारी सामने आई है। रिपोर्ट के मुताबिक, टूर्नामेंट का आगाज 2 अक्टूबर 2027 यानी गांधी जयंती के दिन हो सकता है। हालांकि आईसीसी ने अभी आधिकारिक शेड्यूल जारी नहीं किया है, लेकिन अंदरूनी चर्चा के अनुसार इस खास दिन से टूर्नामेंट शुरू करने की योजना बनाई जा रही है। महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से ऐतिहासिक जुड़ाव को देखते हुए इस तारीख को बेहद खास माना जा रहा है।

रिपोर्ट के अनुसार, आईसीसी 2027 वनडे वर्ल्ड कप की शुरुआत गांधी जयंती के दिन करने पर विचार कर रहा है। महात्मा गांधी ने भारत लौटने से पहले करीब 21 साल दक्षिण अफ्रीका में बिताए थे। ऐसे में दक्षिण अफ्रीका में आयोजित होने वाले क्रिकेट के इस बड़े टूर्नामेंट को गांधी जयंती से जोड़ना उनके शांति और अहिंसा के संदेश को सम्मान देने के तौर पर देखा जा रहा है।

पहले वर्ल्ड कप का उद्घाटन 8 अक्टूबर को प्रस्तावित था और अक्टूबर के पहले सप्ताह में अभ्यास मैच खेले जाने थे। नए प्लान के तहत अभ्यास मुकाबलों को सितंबर के आखिरी सप्ताह में कराया जा सकता है, जिससे मुख्य टूर्नामेंट की शुरुआत 2 अक्टूबर से हो सके।

रिपोर्ट के मुताबिक, 14 टीमों वाला यह टूर्नामेंट करीब 50 दिनों तक चलेगा। इसका फाइनल 21 नवंबर 2027 को खेले जाने की योजना है। तीन देशों में होने वाले इस टूर्नामेंट में दुनिया की शीर्ष टीमें खिताब के लिए भिड़ेंगी।

12 शहरों में खेले जाएंगे मुकाबले

आईसीसी ने टूर्नामेंट के लिए दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया के कुल 12 शहरों को मेजबानी के लिए चुना है। दक्षिण अफ्रीका में जोहान्सबर्ग का वांडरर्स, सेंचुरियन, केपटाउन का न्यूलैंड्स, डरबन का किंग्समीड, गक्बेरहा का सेंट जॉर्ज पार्क, ब्लोमफोंटेन का मंगाउंग ओवल, पार्ल का बोलैंड पार्क और बफेलो पार्क शामिल हैं। जिम्बाब्वे में हरारे स्पोर्ट्स क्लब, बुलावायो का क्वींस स्पोर्ट्स क्लब और विक्टोरिया फॉल्स का मोसी-ओआ-तुन्या स्टेडियम मुकाबलों की मेजबानी करेगा। वहीं नामीबिया की राजधानी विंडहोक का राष्ट्रीय क्रिकेट मैदान भी टूर्नामेंट का हिस्सा होगा।

ऐसा होगा वर्ल्डकप का नया फॉर्मेट

2027 वर्ल्ड कप में फॉर्मेट में भी बदलाव देखने को मिलेगा। शुरुआत में तीन टीमों की सुपर सीरीज होगी, जिसमें से एक टीम बाहर हो जाएगी। इसके बाद 12 टीमों को दो ग्रुप में बांटा जाएगा और हर ग्रुप में छह टीमें होंगी। ग्रुप चरण के बाद टीमें सुपर सेवन चरण में पहुंचेंगी। इसके बाद टूर्नामेंट सेमीफाइनल और फाइनल की ओर बढ़ेगा। इस तरह खिताब के लिए टीमों को कई चरणों से गुजरना होगा।

इन 10 टीमों ने पक्की की जगह

रिपोर्ट के मुताबिक, अब तक 10 टीमों ने टूर्नामेंट के लिए अपनी जगह पक्की कर ली है। इनमें मेजबान दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे के अलावा भारत, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, इंग्लैंड, श्रीलंका, बांग्लादेश और अफगानिस्तान शामिल हैं। बाकी चार टीमों का फैसला अगले साल होने वाले 10 टीमों के क्वालीफाइंग टूर्नामेंट से होगा। इसमें नामीबिया, वेस्टइंडीज और आयरलैंड जैसी टीमें भी हिस्सा लेंगी।

संक्षिप्त समाचार

पाकिस्तान हॉकी वर्ल्डकप में पेनल्टी कॉर्नर का सामान लाना भूला

लंदन (एजेंसी)। पाकिस्तान हॉकी वर्ल्ड कप में इंग्लैंड के खिलाफ पेनल्टी कॉर्नर का सामान लाना भूल गया। टीम की सेफ्टी किट ड्रेसिंग रूम में ही रह गई। इसके कारण कप्तान अबू बकर महमूद को ग्रीन कार्ड दिखाया गया और उन्हें 2 मिनट के लिए मैदान से बाहर बैठना पड़ा। टीम को मैच में हार का सामना भी करना पड़ा। इंग्लैंड ने 4-1 से हराया। इंग्लैंड के 1-0 से आगे होने के कुछ देर बाद करीब 17वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर मिला। पाकिस्तान के खिलाड़ी गोल के पीछे जरूरी प्रोटेक्टिव गियर तलाशने लगे, लेकिन किट वहां मौजूद नहीं थी। बाद में पता चला कि सामान ड्रेसिंग रूम में ही छूट गया था। एक खिलाड़ी को दौड़कर किट लानी पड़ी। किट आने में हुई देरी के बाद रेफरी ने पाकिस्तान के कप्तान अबू बकर महमूद को ग्रीन कार्ड दिखा दिया। उन्हें दो मिनट के लिए मैदान से बाहर जाना पड़ा। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान सलमान अकबर ने इस घटना पर नाराजगी जताई। उन्होंने इसे पाकिस्तान हॉकी का एक और 'अनवॉन्टेड रिकॉर्ड' बताया। उनका कहना था कि वर्ल्ड कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में पेनल्टी कॉर्नर के लिए जरूरी सुरक्षा उपकरण भूलना नहीं चाहिए।उन्होंने कहा कि तैयारी सिर्फ रणनीति, फिटनेस और स्किल तक सीमित नहीं है। टीम में अनुशासन और बेहतर संगठन भी जरूरी है। उनके मुताबिक ऐसी घटना वर्ल्ड कप जैसे बड़े मंच पर टीम की तैयारियों पर सवाल खड़े करती है। किट विवाद के बीच पाकिस्तान मैच भी नहीं बचा सका। इंग्लैंड ने 4-1 से जीत दर्ज की। स्टुअर्ट रशमेयर ने 12वें मिनट में इंग्लैंड का पहला गोल किया। इसके बाद सैम वार्ड ने दूसरे क्वार्टर में बढ़त 2-0 कर दी। सैमुअल हूपर ने 31वें मिनट में तीसरा और जेम्स एलबरी ने 47वें मिनट में चौथा गोल किया। पाकिस्तान की ओर से रेहान अब्दुल अफराज ने 50वें मिनट में एक गोल किया।पाकिस्तान को मैच में दो पेनल्टी कॉर्नर मिले, लेकिन टीम इनमें से किसी को भी गोल में नहीं बदल सकी।

अफगानिस्तान ने आयरलैंड को 6 विकेट से हराया

बेलफास्ट (एजेंसी)। अफगानिस्तान ने आयरलैंड के खिलाफ 299 रन का लक्ष्य 48.5 ओवर में 4 विकेट खोकर हासिल कर लिया। टीम ने 5वें और आखिरी वनडे में आयरलैंड को 6 विकेट से हराया और सीरीज 4-0 से अपने नाम की। बेलफास्ट के सिविल सर्विस क्रिकेट क्लब में खेले गए मुकाबले में रहमत शाह ने नाबाद 143 रन की पारी खेली। उन्होंने सिद्दीकुल्लाह अटल (98) के साथ तीसरे विकेट के लिए 201 रन जोड़े। यह अफगानिस्तान के वनडे इतिहास में तीसरे विकेट की सबसे बड़ी साझेदारी है। अफगानिस्तान ने 299 रन का लक्ष्य हासिल कर वनडे में अपना सबसे बड़ा सफल रन चेज किया। इससे पहले टीम का सबसे बड़ा सफल रन चेज 295 रन था। इस जीत के साथ अफगानिस्तान ने 5 मैचों की सीरीज 4-0 से जीत ली। सीरीज का पहला मुकाबला बारिश के कारण रद्द हो गया था। 299 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी अफगानिस्तान की शुरुआत खराब रही। टीम ने 6 ओवर के अंदर 22 रन पर 2 विकेट गंवा दिए। आयरलैंड के तेज गेंदबाज लियम मैकार्थी ने रहमानुल्लाह गुरबाज और इब्राहिम जादरान को आउट किया।इसके बाद रहमत शाह और सिद्दीकुल्लाह अटल ने पारी को संभाला। दोनों ने शुरुआती दबाव से निकलते हुए धीरे-धीरे रन गति बढ़ाई और आयरलैंड के गेंदबाजों पर दबाव बनाना शुरू किया। रहमत शाह और सिद्दीकुल्लाह अटल ने तीसरे विकेट के लिए 201 रन की साझेदारी की। यह अफगानिस्तान की वनडे में तीसरे विकेट की नई रिकॉर्ड साझेदारी है।इससे पहले यह रिकॉर्ड रहमत शाह और हशमतुल्लाह शाहिदी के नाम था। दोनों ने 2021 में अबू धाबी में आयरलैंड के खिलाफ 184 रन जोड़े थे। अटल ने 98 रन बनाए और शतक से सिर्फ 2 रन दूर रह गए। उनके आउट होने के बाद भी रहमत शाह एक छोर पर टिके रहे।रहमत शाह और सिद्दीकुल्लाह अटल के बीच तीसरे विकेट के लिए

नोवाक जोकोविच को शुरुआती दौर में ही मिली हार, गर्मी से दिखे परेशान

सिनसिनाटी, एजेंसी। सिनसिनाटी मास्टर्स में भीषण गर्मी और उमस का शिकार हुए 39 वर्षीय नोवाक जोकोविच को अपने शुरुआती मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा है। 24 बार के ग्रैंडस्लैम विजेता जोकोविच को अर्जेंटीना के थियागो तिरांते ने ढाई घंटे से अधिक चले कड़े मुकाबले में 2-6, 6-4, 6-4 से हराया। विंबलडन सेमीफाइनल में यानिक सिनर से हारने के एक महीने से अधिक समय बाद यह जोकोविच का पहला मैच था।

यूएस ओपन की तैयारियों में जुटेंगे जोकोविच

2023 के चैंपियन जोकोविच ने पहला सेट आसानी से जीत लिया था, लेकिन दूसरे सेट में गर्मी ने उन्हें बेहाल कर दिया। दूसरे सेट के 18 मिनट तक चले गेम में संघर्ष करने के बाद जोकोविच कोर्ट पर ही घुटनों के बल बैठ गए और उन्हें मेडिकल टाइमआउट के साथ-साथ फिजियो व डॉक्टर की मदद लेनी पड़ी। दोनों खिलाड़ियों ने ब्रेक के दौरान लॉकर रूम में जाकर खुद को ठंडा किया। तीसरे सेट में जोकोविच ने वापसी की कोशिश की, लेकिन नौवें गेम और फिर मैच प्वाइंट पर ड्रॉप शॉट चूकने से तिरांते ने अपने करियर की सबसे बड़ी जीत दर्ज की। जोकोविच ने स्वीकार किया कि गर्मी और उमस ने उन पर भारी असर डाला और शायद यह सिनसिनाटी में उनका आखिरी मैच था। अब वह 30 अगस्त से शुरू होने वाले यूएस ओपन की तैयारियों में जुटेंगे।

पुरुष वर्ग के अन्य मुकाबलों में सातवें वरीय और फ्रेंच ओपन के उपविजेता फ्लेवियो कोबोली ने मियोमिर केत्मानोविच को 6-1, 4-6, 6-3 से हराया। वहीं, मार्टिन लांडालुस ने माटेओ अर्नाल्डी को 6-4, 4-6, 6-4 से मात दी और अब तीसरे दौर में उनका सामना जोकोविच को हराने वाले तिरांते से होगा।

तूफान के कारण 90 मिनट खेल रूका, इयाला तीसरे दौर में पहुंचीं

महिला वर्ग में फिलीपींस की खिलाड़ी एलेक्जेंड्रा इयाला ने तीसरे दौर में जगह बना ली है। इयाला 6-1, 3-0 से आगे थीं, तभी तूफान के कारण 90 मिनट तक खेल रुका रहा और इसी दौरान चोटिल एलेना-गैब्रिएला रूसे (रोमानिया) ने मैच बीच में ही छोड़ने का फैसला किया। रूसे को मैच रुकने से ठीक पहले टखने में चोट के कारण उपचार मिला था। इयाला जिन्होंने इसी महीने वाशिंगटन में अपना पहला डब्ल्यूटीए खिताब जीता था अब नौवीं वरीयता प्राप्त अमेरिकी अमांडा अनिसिमोवा से भिड़ेंगी, जिन्होंने तुर्किये की जेनेप सोनमेज को 6-2, 6-3 से हराया। 21 वर्षीय इयाला को हमेशा की तरह फिलीपींस के दर्शकों का भारी समर्थन मिला, जैसा कि उन्हें विंबलडन और टोरंटो के इवेंट में भी मिला था। मैच के बाद इयाला ने कहा कि वह खेल पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित कर रही थी, लेकिन कोई भी खिलाड़ी प्रतिद्वंद्वी के चोटिल होकर रिटायर होने से मैच नहीं जीतना चाहता। अन्य महिला मुकाबलों में विंबलडन में चोटिल होने के कारण एक महीने तक कोर्ट से दूर रहीं रोलैंड गैरोस की फाइनलिस्ट माजा चवालिंस्का ने स्पेन की क्रिस्टीना बुक्सा को 6-2, 6-2 से हराया।

गॉल टेस्ट: देवदत्त पडिक्कल ने खेली 167 रन की पारी, बनाए ये रिकॉर्ड्स

नईदिल्ली (एजेंसी)। श्रीलंका क्रिकेट टीम के खिलाफ पहले टेस्ट में भारतीय क्रिकेट टीम के देवदत्त पडिक्कल ने बड़ा शतक (167) लगाया। वह दूसरे दिन के दूसरे सत्र में विपक्षी स्पिनर प्रभात जयसूर्या का शिकार बने। उनके इस बड़े शतक की मदद से भारत ने दूसरे दिन के तीसरे सत्र की समाप्ति तक 360/9 का स्कोर बनाया। इस बेहतरीन पारी से पडिक्कल ने अपने चयन को सही साबित किया। पडिक्कल पहले दिन के खेल की समाप्ति तक 131 रन बनाकर क्रीज पर नाबाद थे। उन्होंने दूसरे दिन अपने निजी स्कोर में 36 रन और जोड़े। वह 230 गेंदों में 167 रन बनाकर आउट हुए, जिसमें 15 चौके और एक छक्का शामिल था। अपनी इस पारी के दौरान उन्होंने केएल राहुल के साथ मिलकर 162 रन की साझेदारी की। वहीं, राहुल शतक बनाने से चूक गए और 82 रन बनाकर आउट हुए।

इस सूची में शामिल हुए पडिक्कल

पडिक्कल श्रीलंका के खिलाफ नंबर-3 पर खेलते हुए 150 से ज्यादा रन बनाने वाले तीसरे भारतीय बल्लेबाज हैं। उनसे पहले राहुल द्रविड़ और चेतेश्वर पुजारा ऐसा कर चुके थे। पूर्व भारतीय कप्तान द्रविड़ ने 2009 में नंबर-3 पर खेलते हुए अहमदाबाद टेस्ट में 177 रन की पारी खेली थी। वहीं, पुजारा ने 2017 में 153 रन बनाए थे। उन्होंने ये पारी गॉल के ही मैदान पर खेली थी।

नंबर-3 पर खेलते हासिल किए ये मुकाम

नंबर-3 पर बल्लेबाजी करते हुए टेस्ट में शतक लगाने वाले आखिरी भारतीय शुभमन गिल थे, जिन्होंने सितंबर 2024 में चेन्नई में बांग्लादेश के खिलाफ शतकीय पारी खेली थी। पडिक्कल 21वीं सदी में भारत के लिए नंबर-3 पर खेलते हुए टेस्ट शतक लगाने वाले दूसरे बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं। उनसे पहले पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने 2002 में दिल्ली में जिम्बाब्वे के खिलाफ 136 रन बनाए थे।

बांग्लादेश की ऐतिहासिक जीत

ऑस्ट्रेलिया में पहली बार कंगारू टीम को टेस्ट में हराया

डार्विन। बांग्लादेश ने शानदार प्रदर्शन करते हुए ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। बांग्लादेश ने ऑस्ट्रेलिया को पहले टेस्ट मैच के चौथे दिन नौ विकेट से हराया। बांग्लादेश की यह ऑस्ट्रेलियाई धरती पर पहली टेस्ट जीत है। रविवार को ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी चौथे दिन 284 रन पर ऑलआउट हुई जिससे बांग्लादेश को जीत के लिए 57 रनों का लक्ष्य मिला। ऑस्ट्रेलिया के लिए दूसरी पारी में कैमरन ग्रीन ने शतक लगाया और टीम को मामूली बढ़त दिलाई। ग्रीन का साथ दूसरे छोर पर कोई बल्लेबाज नहीं दे सका। बांग्लादेश ने दूसरी पारी में एक विकेट के नुकसान पर 57 रन बनाकर मैच अपने नाम किया और दो मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली। कम लक्ष्य का पीछा करने उतरी बांग्लादेश को जोश हेजलवुड ने पहला झटका दिया। हेजलवुड ने तंजिद हसन तमीम को खाता खोले बिना आउट किया। इसके बाद शदमान इस्लाम और मोमिनुल हक ने बांग्लादेश को आसानी से जीत दिलाई। हक 30 और इस्लाम 25 रन बनाकर नाबाद रहे। बांग्लादेश ने इस मैच में शानदार प्रदर्शन किया है और ऑस्ट्रेलिया को उसके घर में ही झटका दिया है। ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 198 रन बनाए, जबकि बांग्लादेश की पहली पारी 426 रन पर ऑलआउट हुई। इस तरह बांग्लादेश ने 228 रनों की बढ़त हासिल कर ली थी। दूसरी पारी में भी ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाजी कुछ खास नहीं रही और टीम ने 207 रन के स्कोर पर ही सात विकेट गंवा दिए। इसके बाद ग्रीन ने स्टार्क के साथ मिलकर साझेदारी की और टीम को बढ़त दिलाने में सफल रहे। चौथे दिन लंच ब्रेक तक ऑस्ट्रेलिया ने दूसरी पारी में सात विकेट पर 243 रन बनाए। लंच ब्रेक के बाद हालांकि, ऑस्ट्रेलिया को मिचेल स्टार्क के रूप में आठवां झटका लगा। ग्रीन और स्टार्क ने आठवें विकेट के लिए 43 रनों की साझेदारी की। तस्कीन अहमद ने स्टार्क को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। स्टार्क 18 रन बनाकर आउट हुए। तीसरे दिन का खेल खत्म होने तक ऑस्ट्रेलिया ने अपनी दूसरी पारी में चार विकेट गंवाकर 161 रन बना लिए थे।

प्रतिका रावल का एशिया कप के लिए चयन, वॉरविकशायर के वनडे कप से हुई बाहर

नई दिल्ली। भारतीय महिला टीम की शीर्ष क्रम की बल्लेबाज प्रतिका रावल को आगामी एसीसी महिला एशिया कप के लिए पहली बार टी20 अंतरराष्ट्रीय टीम में शामिल किया गया है। इसके चलते वह इंग्लैंड में वॉरविकशायर के साथ अपने निर्धारित वनडे कप कार्यकाल में हिस्सा नहीं ले पाएंगी। प्रतिका को स्टार बल्लेबाज जेमिमा रोड्रिग्स की जगह भारतीय टीम में शामिल किया गया है। जेमिमा दाएं पैर की हैमस्ट्रिंग में हाई-ग्रेड चोट के कारण एशिया कप के साथ-साथ जापान में होने वाले एशियाई खेलों से भी बाहर हो गई हैं।25 वर्षीय प्रतिका को 19 अगस्त को वॉरविकशायर से जुड़ना था और वह सीजन के बाकी मुकाबलों में टीम का हिस्सा बनने वाली थीं। हालांकि, भारत की ओर से पहली टी20 अंतरराष्ट्रीय कॉल-अप मिलने के बाद अब वह एजबेस्टन नहीं जाएंगी। वॉरविकशायर महिला टीम के मुख्य कोच अली मेडन ने प्रतिका के नहीं जुड़ पाने पर निराशा जताई, लेकिन राष्ट्रीय टीम के साथ उनके अभियान के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि टीम प्रतिका का बेसब्री से स्वागत करने की तैयारी कर रही थी और उनके बाहर होने से निराशा हुई है। हालांकि, उन्होंने कहा कि सीजन के बाकी हिस्से में टीम के पास अभी काफी कुछ हासिल करने का मौका है और मौजूदा खिलाड़ियों पर उन्हें पूरा भरोसा है। प्रतिका रावल भारत की 2025 महिला वनडे विश्व कप विजेता टीम की सदस्य रही हैं। वह अब तक 27 वनडे अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुकी हैं, जिसमें उन्होंने 1189 रन बनाए हैं। इसके अलावा, उन्होंने इस साल की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पर्थ में अपने टेस्ट डेब्यू पर अर्धशतक भी लगाया था। हालांकि, टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में उन्होंने अभी तक भारत का प्रतिनिधित्व नहीं किया है।

30 अगस्त को थाईलैंड से होगा भारत का मुकाबला

प्रतिका अब हरमनप्रीत कौर की अगुवाई वाली भारतीय टीम के साथ दुबई जाएंगी। भारत एशिया कप में अपने अभियान की शुरुआत 30 अगस्त को थाईलैंड के खिलाफ करेगा। इसके बाद भारतीय टीम तीन सितंबर को हांगकांग और चीन से भिड़ेगी, जबकि बहुप्रतीक्षित मुकाबले में पांच सितंबर को पाकिस्तान का सामना करेगी। एशिया कप के सभी मुकाबले दुबई अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में खेले जाएंगे। पहली बार यूएई इस टूर्नामेंट की मेजबानी कर रहा है। टूर्नामेंट के सेमीफाइनल 10 और 11 सितंबर, जबकि फाइनल 13 सितंबर को खेला जाएगा।

स्वतंत्रता दिवस पर निकली भव्य बाइक रैली

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हिंदू मोर्चा पश्चिम बंगाल इकाई की ओर से हावड़ा के काजीपाड़ा से बेलूर तक भव्य बाइक रैली निकाली गई। रैली में बड़ी संख्या में लोगों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।
रैली में शामिल लोग हाथों में तिरंगा और भगवा ध्वज लेकर भारत माता का जयघोष करते नजर आए। देशभक्ति के नारों से रैली का माहौल पूरी तरह राष्ट्रभक्ति से सराबोर रहा। काजीपाड़ा से शुरू हुई यह बाइक रैली विभिन्न मार्गों से होते हुए बेलूर पहुंची, जहां कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने उत्साह के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया।
यह रैली हिंदू मोर्चा पश्चिम बंगाल सौहार्द से आयोजित की गई.आयोजकों के अनुसार, रैली का उद्देश्य स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम का संदेश जन-जन तक पहुंचाना था। जगह-जगह स्कूल हो या शहर का गली या मोहल्ला सभी जगह देशभक्ति गीत सुनाई दिए और भारत माता की पूजा की गई कहीं 100 फुट तिरंगा रैली निकाली गई।

हर घर तिरंगा यात्रा में उमड़ा देशभक्ति का जज्बा

सोनी कुमारी झा: हावड़ा जिला प्रशासन की ओर से स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'हर घर तिरंगा' कार्यक्रम के तहत तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। मुख्यमंत्री सुभेंदु अधिकारी के दिशा-निर्देश पर निकाली गई इस यात्रा में बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया और देशभक्ति के नारों के साथ राष्ट्रीय ध्वज लेकर यात्रा की।
कार्यक्रम में राज्य के मंत्री उमेश राय, हावड़ा की जिला शासक पि दिप्प प्रिया, पुलिस कमिश्नर अखिलेश चतुर्वेदी सहित प्रशासन एवं पुलिस विभाग के अधिकारी और अन्य विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। अधिकारियों ने लोगों से अपने घरों पर तिरंगा फहराने और स्वतंत्रता दिवस के इस अभियान में सक्रिय भागीदारी करने की अपील की।
तिरंगा यात्रा के दौरान पूरे इलाके में देशभक्ति का माहौल देखने को मिला। कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों में राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति और तिरंगे के प्रति सम्मान की भावना को और मजबूत करना है।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत 450 बच्चों के बीच तिरंगा और पाठ्य सामग्री वितरित

हर घर तिरंगा अभियान के तहत वार्ड नंबर 29 में हावड़ा जिला युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष जयंत गुप्ता के नेतृत्व में विभिन्न विद्यालयों में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान लगभग 450 बच्चों के बीच तिरंगा और पाठ्य सामग्री वितरित की गई। कार्यक्रम के तहत ज्ञान पीठ विद्यालय, राष्ट्रीय विद्यालय, विजय विद्यालय, रवींद्र शिक्षा सदन और हावड़ा हाट हिंदी प्राइमरी स्कूल सहित कई अन्य विद्यालयों में बच्चों को तिरंगा एवं पढ़ाई से संबंधित सामग्री प्रदान की गई।
आयोजकों ने कहा कि अभियान का उद्देश्य बच्चों में देशभक्ति की भावना को मजबूत करने के साथ-साथ उन्हें शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करना है। कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी नेतृत्ववृंद और कार्यकर्ताओं के प्रति आयोजकों ने आभार व्यक्त किया।

हावड़ा मैदान शक्ति दल के 3वें भारत माता पूजन एवं स्वाधीनता दिवस समारोह का भव्य समापन

हावड़ा मैदान शक्ति दल द्वारा आयोजित 3वें भारत माता पूजन एवं स्वाधीनता दिवस समारोह का तीन दिवसीय आयोजन रविवार को भारत माता के श्रीविग्रह के नगर भ्रमण एवं भोग-प्रसाद वितरण के साथ संपन्न हुआ। इस दौरान श्रद्धालुओं एवं कार्यकर्ताओं में विशेष उत्साह देखने को मिला।
तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान विविधता में एकता का संदेश देते हुए विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक बद्रीनारायण सिंह एवं संतोष सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही। वहीं, निधि संग्रह टोली के प्रमुख सिंह ब्रदर्स की तिकड़ी– कुन्दन सिंह, मुकेश सिंह एवं विमलेश सिंह ने आयोजन को सफल बनाने में विशेष योगदान दिया। मंच व्यवस्था की जिम्मेदारी सुनील बिहारी ने संभाली।
आयोजकों ने बताया कि समारोह की सफलता में सभी सदस्यों एवं कार्यकर्ता बंधुओं की महती भूमिका रही। समापन अवसर पर भारत माता के श्रीविग्रह के नगर भ्रमण के बाद श्रद्धालुओं के बीच भोग-प्रसाद का वितरण किया गया।

मिथिला ग्लोबल बिजनेस नेटवर्क का गठन
17 व्यापारी बंधुओं की पहली बैठक में बनी रूपरेखा

मिथिला समाज के व्यवसायियों को एक मंच पर लाने और आपसी सहयोग के माध्यम से उनके व्यवसाय को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से मिथिला ग्लोबल बिजनेस नेटवर्क का गठन किया गया। संगठन की पहली बैठक में करीब 17 व्यापारी बंधुओं ने हिस्सा लिया।
बैठक में उपस्थित सभी व्यापारियों के प्रति आयोजकों ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस नेटवर्क का मुख्य उद्देश्य व्यवसायियों के बीच बिजनेस रेफरल, आपसी सहयोग, नए व्यापारिक अवसरों की तलाश और एक-दूसरे के व्यवसाय को बढ़ावा देना है।
मिथिला ग्लोबल बिजनेस नेटवर्क को पूर्णतः नॉन-प्रॉफिट ऑर्गनाइजेशन के रूप में संचालित किया जाएगा। संगठन की ओर से प्रत्येक महीने एक मंथली मीटिंग आयोजित की जाएगी। बैठक कोलकाता में होगी । संगठन का पहला आधिकारिक गेट-टूगेदर 11 सितंबर 2026 को आयोजित किया जाएगा। इसके बाद प्रत्येक महीने के अंतिम शुक्रवार को मासिक बैठक आयोजित करने की योजना है।
वर्तमान नेतृत्व टीम में श्री पवन झा को अध्यक्ष बनाया गया है। नेतृत्व टीम का कार्यकाल एक वर्ष का होगा और प्रत्येक वर्ष नई नेतृत्व टीम का गठन किया जाएगा। व्यवसायिक गतिविधियों, समन्वय और अन्य कार्यों को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए आगे कुछ कोऑर्डिनेटरों की भी नियुक्ति की जाएगी।
बैठक के नियम एवं विनियम को लेकर फिलहाल विचार-विमर्श चल रहा है। सदस्यों के सुझावों के आधार पर इन्हें जल्द अंतिम रूप दिया जाएगा। संगठन के प्रमुख उद्देश्यों में एक-दूसरे को बिजनेस रेफरल देना, आपसी सहयोग से व्यापार को बढ़ाना, नए बिजनेस अवसर तलाशना, सदस्यों को अपनी बैठकों में विजिटर्स लाने का अवसर देना, नियमित बिजनेस गतिविधियां आयोजित करना तथा बेहतर प्रदर्शन करने वाले सदस्यों को रिवार्ड्स एवं रिकॉग्निशन प्रदान करना शामिल है।
आयोजकों का कहना है कि संगठन का उद्देश्य केवल मासिक बैठक तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि एक ऐसी मजबूत और भरोसेमंद बिजनेस कम्युनिटी तैयार करना है, जहां प्रत्येक सदस्य दूसरे सदस्य के व्यवसायिक विकास में सहयोगी बन सके। बैठक में शामिल सभी व्यापारी बंधुओं का आभार व्यक्त करते हुए संगठन की ओर से अधिक से अधिक व्यवसायियों से नेटवर्क से जुड़ने और मिल-जुलकर व्यवसायिक विकास की दिशा में आगे बढ़ने का आह्वान किया गया।

समाजवादी पार्टी की ओर से मध्य हावड़ा के जय हिंद बाजार स्थित 15 अगस्त के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जहां पहले पार्टी का झंडा श्रीकांत घोष ने फहराया उसके बाद देर रात राष्ट्रीय झंडा तिरंगा भी फहराया जाएगा इस दौरान नृत्य संगीत का कार्यक्रम आयोजन किया गया

"घर नहीं है, तिरंगा कहां लगाएंगे?"
आवास से वंचित होने के आरोप में कोलड़ा में प्रदर्शन!

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर जब पूरे देश में हर घर तिरंगा अभियान की तैयारियां जोरों पर है, वहीं सिर पर छत नहीं होने की पीड़ा को लेकर कोलड़ा के आम लोग सड़क पर उतर आए।
कोलड़ा नंबर-1 ग्राम पंचायत के जामदह इलाके में सौ से अधिक स्थानीय निवासियों ने एक प्रतीकात्मक विरोध रैली निकाली। रैली में क्षेत्र के भाजपा नेता और कार्यकर्ता भी शामिल हुए।
इस विरोध प्रदर्शन की सबसे खास बात इसका तरीका रहा। प्रदर्शनकारियों के एक हाथ में राष्ट्रीय ध्वज था, जबकि दूसरे हाथ में थर्मोकोल से बना प्रतीकात्मक घर था। 'हर घर तिरंगा' के जवाब में प्रदर्शनकारियों ने नारा दिया– 'पहले घर दीजिए, फिर तिरंगा लगाएंगे!'
स्थानीय निवासियों का आरोप है कि लंबे समय से आवास योजना के लिए आवेदन करने के बावजूद उन्हें अब तक पक्का मकान नहीं मिला है। उनका कहना है कि वे सरकारी योजना के लाभ से वंचित हैं।
रैली में शामिल एक स्थानीय निवासी ने कहा, 'प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि हर घर में तिरंगा लगाएं। हमारा घर ही नहीं है, तो तिरंगा कहां लगाएंगे? कच्चे घर में लगाएंगे तो बारिश में भीगकर खराब हो जाएगा।'
स्थानीय भाजपा नेतृत्व का आरोप है कि पात्र होने के बावजूद राजनीतिक कारणों से कई वास्तविक लाभार्थियों को आवास योजना का लाभ नहीं मिल रहा है। उन्होंने प्रशासन से तत्काल हस्तक्षेप कर समस्या का समाधान करने की मांग की।
इस संबंध में कोलड़ा नंबर-1 ग्राम पंचायत की प्रधान निलुफा मल्लिक ने कहा, "शिकायत मेरे संज्ञान में आई है। जिन लोगों को वास्तव में घर नहीं मिला है, उनकी सूची की जांच की जा रही है। उच्च अधिकारियों से बात कर जल्द कार्रवाई करने का आश्वासन दिया जा रहा है।"
देशभक्ति के पर्व से ठीक पहले आवास की मांग को लेकर हुए इस प्रदर्शन ने इलाके में चर्चा पैदा कर दी है। अब स्थानीय लोगों की नजर इस बात पर है कि प्रशासन उनकी घर की मांग का समाधान कितनी जल्दी करता है।

वंदे मातरम् के अपमान के विरोध में भाजपा का प्रदर्शन, सोनिया गांधी का पुतला फूंका

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिल्ली स्थित कांग्रेस मुख्यालय में वंदे मातरम् गीत के कथित अपमान को लेकर रविवार को हावड़ा जिला भाजपा की ओर से विरोध प्रदर्शन किया गया। हावड़ा मैदान मेट्रो चैनल के समीप भाजपा समर्थकों ने सड़क पर प्रदर्शन करते हुए विरोध जताया। प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस के खिलाफ नारेबाजी की और सोनिया गांधी का पुतला दहन कर अपना आक्रोश व्यक्त किया। भाजपा कार्यकर्ताओं का आरोप था कि राष्ट्रभक्ति से जुड़े वंदे मातरम् जैसे सम्मानित गीत का अपमान देश की भावनाओं का अपमान है।
प्रदर्शन के कारण इलाके में कुछ समय के लिए यातायात प्रभावित हुआ। मौके पर पुलिस की मौजूदगी में प्रदर्शनकारियों को नियंत्रित किया गया। भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने इस घटना के खिलाफ अपना विरोध दर्ज कराते हुए दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की।

भाई-बहन के अटूट प्रेम और विश्वास का प्रतीक है रक्षाबंधन

पुष्पा साव: रक्षाबंधन हिंदू धर्म का प्रमुख और पवित्र त्योहार है। यह पर्व भाई-बहन के बीच प्रेम, स्नेह, विश्वास और सुरक्षा के संकल्प का प्रतीक माना जाता है। हर वर्ष सावन मास की पूर्णिमा के दिन रक्षाबंधन का त्योहार पूरे देश में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन बहन अपने भाई की कलाई पर रक्षा सूत्र यानी राखी बांधकर उसके सुखी एवं समृद्ध जीवन की कामना करती है। भाई भी अपनी बहन की रक्षा और हर सुख-दुख में साथ देने का वचन देता है।

इस बार 28 अगस्त को मनाया जाएगा रक्षाबंधन

वर्ष 2026 में रक्षाबंधन का पर्व 28 अगस्त, शुक्रवार को मनाया जाएगा। यह पर्व श्रावण मास की पूर्णिमा के अवसर पर मनाया जाता है। पंचांग के अनुसार श्रावण पूर्णिमा तिथि 27 अगस्त की सुबह शुरू होकर 28 अगस्त की सुबह तक रहेगी, इसलिए रक्षाबंधन का मुख्य पर्व 28 अगस्त को मनाया जाएगा।
इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधेंगी और उनके सुख समृद्धि एवं लंबी उम्र की कामना करेंगी। भाई अपनी बहनों को उपहार देकर जीवनभर उनकी रक्षा और साथ निभाने का संकल्प लेंगे।

कब मनाया जाता है रक्षाबंधन?

रक्षाबंधन का पर्व सावन मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। हिंदू पंचांग के अनुसार इसकी तारीख हर वर्ष बदलती रहती है। इस दिन घरों में विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। बहनें अपने भाइयों के लिए राखी, मिठाई और पूजा की थाली तैयार करती हैं। राखी बांधने के बाद भाई अपनी बहन को उपहार देकर उसके प्रति अपने स्नेह का इजहार करता है।

कब से शुरू हुई रक्षाबंधन की परंपरा?

रक्षाबंधन की परंपरा कितनी पुरानी है, इसकी कोई निश्चित ऐतिहासिक तिथि उपलब्ध नहीं है। हालांकि, रक्षा सूत्र बांधने की परंपरा का उल्लेख प्राचीन भारतीय धार्मिक और पौराणिक परंपराओं में मिलता है। समय के साथ यह परंपरा भाई-बहन के पवित्र रिश्ते से जुड़ गई और रक्षाबंधन एक प्रमुख सामाजिक एवं धार्मिक पर्व बन गया।

भगवान श्रीकृष्ण और द्रौपदी से जुड़ी है प्रसिद्ध कथा

रक्षाबंधन से जुड़ी प्रसिद्ध पौराणिक कथाओं में भगवान श्रीकृष्ण और द्रौपदी की कथा भी शामिल है। मान्यता है कि एक बार भगवान श्रीकृष्ण की उंगली में चोट लगने पर द्रौपदी ने अपनी साड़ी का एक टुकड़ा फाड़कर उनकी उंगली पर बांध दिया था। श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को बहन के समान माना और उनकी रक्षा का वचन दिया। महाभारत की कथा में बाद में श्रीकृष्ण द्वारा द्रौपदी की लाज बचाने का प्रसंग आता है। इसी कथा को रक्षा-सूत्र के भाव से जोड़ा जाता है।

राखी केवल धागा नहीं, रिश्ते का विश्वास है

रक्षाबंधन में बांधी जाने वाली राखी केवल एक धागा नहीं, बल्कि प्रेम, विश्वास और जिम्मेदारी का प्रतीक मानी जाती है। यह त्योहार भाई-बहन को एक-दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों और भावनाओं की याद दिलाता है। आधुनिक समय में भी रक्षाबंधन का महत्व कम नहीं हुआ है, बल्कि यह पर्व परिवार और रिश्तों को जोड़ने का महत्वपूर्ण अवसर बन गया है।

देशभर में उत्साह से मनाया जाता है पर्व

रक्षाबंधन के अवसर पर बाजारों में रंग-बिरंगी राखियों और मिठाइयों की रौनक देखने को मिलती है। बहनें अपने भाइयों के लिए सुंदर राखियां खरीदती हैं। दूर रहने वाले भाई-बहन भी फोन, वीडियो कॉल और ऑनलाइन माध्यम से एक-दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं। कई बहनें डाक या कूरियर के माध्यम से अपने भाइयों को राखी भेजती हैं। रक्षाबंधन का पर्व हमें यह संदेश देता है कि सच्चे रिश्ते प्रेम, विश्वास और सम्मान से मजबूत होते हैं। भाई-बहन के इस पवित्र रिश्ते को समर्पित यह त्योहार आज भी भारतीय संस्कृति और परंपरा की खूबसूरती को जीवित रखे हुए है।

80वें स्वतंत्रता दिवस पर नवान्न में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया

80वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राज्य के मुख्य प्रशासनिक कार्यालय नवान्न में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। नवान्न परिसर में पर्यटन एवं सूचना एवं संस्कृति विभाग की राज्य मंत्री पूर्णिमा चक्रवर्ती ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया।
राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद उपस्थित सभी लोगों ने देश के स्वतंत्रता संग्राम के वीर शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नवान्न परिसर में देशभक्ति का माहौल देखने को मिला।
कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी और कर्मचारी भी उपस्थित रहे।
इस दौरान राष्ट्रीय ध्वज की गरिमा बनाए रखने और देश के विकास में सभी से मिलकर काम करने का आह्वान किया गया।

बात हिंदुस्तान की अखबार से जुड़ने और किसी भी तरह के खबर को प्रसारित करने के लिए संपर्क करें 9798848926

स्वत्वाधिकारी 'बात हिन्दुस्तान की' (पाक्षिक) पेपर के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी, गार्डेन, शिवपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन नं.: 8902221434 से प्रकाशित एवं एल.एस पब्लिकेशन्स प्रा. लि.4, कैनल वेस्ट रोड, कोलकाता -700015 से मुद्रित, सम्पादक- वैद्यनाथ झा, फोन-9798848926 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के उत्तरदायी, ईमेल/वेबसाईट - www.baathindustanki@gmail.com
(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan ki' Smt. Soni Kumari Jha, 223, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO_R.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from L.S. publication private limited.4 no, canel west road, Kolkata 700015, Editor: Baidyanath Jha Mo. 9798848926, Email/Website: www.baathindustanki@gmail.com